शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# मुगल चित्रशैली और प्रकृति

डॉ. वीना रानी
चित्रकला विभाग
चंदौसी इंटर कॉलेज
चंदौसी, संभल, उत्तरप्रदेश, भारत

## शोध संक्षेप

*प्रकृति ने मानव जाति को हमेशा ही प्रभावित किया है। प्रकृति मानव की जन्मजात सहचरी रही है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी तरह प्रकृति से जुड़ा रहता है। मनुष्य ने प्रकृति की सहायता से ही अपनी चेतन शक्ति का विकास किया है। मानव ने प्रकृति में निहित मांगलिक भावना को महसूस कर प्राकृतिक सत्ता को स्वीकार किया है और उसे सर्वोच्च माना है। भारत में मुगल और राजस्थानी चित्रकला का समृद्ध इतिहास है। राजस्थानी शैली के चित्रों में भी प्रकृति का अद्वितीय चित्रण हुआ है और मुगल शैली में भी प्रकृति का अनुपम सौन्दर्य देखने को मिलता है। मुगल साम्राज्य की उन्नति के साथ-साथ मुगल चित्रकला भी उन्नति करती रही। मुगल शैली में कई विषयों पर चित्र रचना की गयी है। यद्यपि मुगलों की अधिक रूचि व्यक्ति चित्रण में थी तद्यापि मुगलों को प्रकृति से भी बहुत लगाव रहा है। मुगल शैली में प्रकृति के विभिन्न सौन्दर्यात्मक अवयवों का चित्रण हुआ है। मुगल शैली के चित्रों में प्रकृति का अपना एक विशेष स्थान रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में मुग़ल चित्र शैली और प्रकृति पर विचार किया गया है।*

## भूमिका

भारत की कला, भारतीय धर्म, साहित्य व दर्शन के समान ही समृद्ध व विशाल है। कला का आन्दोलन एक समय में जन्म लेकर फलते-फूलते व समृद्धि को प्राप्त होते रहे हैं व जल तरंगों की भाँति वह अपना वेग दूसरे युग की प्रेरणाओं को सौंप कर विलीन हो जाते है।1 इसी प्रकार एक युग की परम्पराऐं व सांस्कृतिक विरासत दूसरे युग के लोगों तक पहुँचती रही है।

विश्व की सभी शैलियों को प्रकृति ने प्रभावित किया है। इग्लैंड का दृश्य चित्रण तो पूरे विश्व में विख्यात है। भारत की विभिन्न शैलियों में भी प्रकृति अंकन का अपना अलग ही महत्त्व रहा है। इसका स्मरण हमें भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रों से ही होने लगता है। आदिमानव ने प्राकृतिक प्रकोप से बचने के लिये चित्र रचना आरम्भ की। इस समय के चित्रों में गैंडा, सुअर, हाथी, महिष, बैल, नीलगाय, सिंह, हिरन आदि पशुओं तथा मोर व हंस आदि पक्षियों के चित्र मिलते हैं।2 यह शिलाचित्र-चित्रकला की एक विधा मात्र नहीं हैं बल्कि यह मानवता के विकास का एक निश्चित सोपान प्रस्तुत करते हैं।

विश्व विख्यात अजन्ता की गुफाओं की चित्र रचना तो अत्यन्त समृद्ध है। अजन्ता के अधिकतर चित्रों में प्रकृति के किसी न किसी रूप का अंकन हुआ है। यहाँ हाथी, घोडे, बन्दर, भेड़, बैल, मृग, हंस, मोर आदि विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों का चित्रण हुआ है।3 इनका अंकन यथार्थ व काल्पनिक रूपों में हुआ है। पहली गुफा का 'दो हाथियों का मिलन'4 नामक चित्र बड़ी

सुन्दरता से चित्रित हुआ है। 'पदमपाणि बोधिसत्व'5 के चित्र में बुद्ध भगवान के हाथ में कमल का फूल को बनाया गया है, इसी प्रकार वृक्षों के चित्रांकन में कदली, अशोक, साल, आम, बदगद, पीपल, ताड़ आदि के वृक्ष बनाये गये हैं। चित्रों के संयोजन में वृक्षों आदि के योग से दृश्य की स्वाभाविकता दृष्टिगोचर होती है।6 चित्रकारों ने विभिन्न प्रकार की फूल पत्तियों का आलंकारिक चित्रण किया है।

फूलों में सबसे अधिक चित्रण कमल के फूल का हुआ है। अजन्ता की गुफाओं के अतिरिक्त इन भित्ती चित्रों 7 को बादामी, बाघ, एलोरा, सित्तन वासल आदि गुफाओं में भी पाया गया है जिनमें प्राकृति का अनुपम सौन्दर्य देखने को मिलता है।

अजन्ता व उसकी समकालीन अन्य शैलियों के पश्चात् पाल व जैन शैलियों में भी प्रकृति का अंकन दृष्टिगत होता है परन्तु इन चित्रों में अंलकारिकता व भावात्मकता का अभाव पाया जाता है। अपभ्रंश शैली के 'शिकार' नामक चित्र में प्रकृति का आलेखन आलंकारिक रूप में किया गया है।8 परन्तु इसमें पशु-पक्षी व अन्य आकृतियाँ खिलौने के समान लगती है। अपभ्रंश शैली में प्राकृतिक व यथार्थ रूपों को बिल्कुल भुला दिया गया है जिससे उनकी स्वाभाविकता ही नष्ट हो गई।

इस शैली के चित्र निर्जीव और भद्दे लगते हैं, क्योंकि इससे पहले चित्रकार भित्ति चित्रण किया करते थे, परन्तु जब उनके हाथ में लघु चित्र का कार्य आया तो वह रेखा को महीन, बारीक व गतिशील नहीं बना सके, क्योंकि भित्ति चित्रण बड़ी पृष्ठ भूमि पर बनाये जाते थे और लघु चित्र छोटे होते थे। इन सब कमियों के बावजूद भी इस शैली में प्रकृति चित्रण हुआ है।

## मुग़ल चित्रशैली और प्रकृति

तत्पश्चात् इस काल में चित्रकला की दो शैलियाँ प्रचलित थी एक ईरानी व दूसरी भारतीय। मुगल सम्राट ईरान से भारत आते समय अपने साथ वहाँ के चित्रकारों को भी साथ लाये। इसी कारण अधिकतर मुगल चित्रकार ईरानी थे या वे अन्य भारतीय चित्रकारों के गुरू थे। इसलिये उनके चित्रों में ईरानी तत्व अधिक था तथा कुछ चित्रकारों ने पूर्णता भारतीय शैली में ही काम किया लेकिन बहुत से कुशल चित्रकारों के चित्रों में ईरानी व भारतीय शैली को बड़ी सुन्दरता से संयोजित किया गया है। इस सन्दर्भ में 'अमीर आयाज़ का कामिर को मरते देखना' नामक चित्र में हमें दोनों ही शैलियों के दिग्दर्शन होते हैं।9 इस चित्र में चित्रकार ने कई विषयों को बड़ी सुन्दरता से संयोजित किया है। अग्रभाग में शेर और घोडे का चित्रण पूर्णतः फारसी शैली में किया गया है परन्तु मरणासन्न कामिर के पीछे का वृक्ष सावधानी से बनाई गई पत्तियाँ, टहनियों पर खेलता बन्दर, पत्तियों, की झुरमुट में बैठी हुई चिड़ियाँ तथा पृष्ठभूमि में घूमता हुआ मेमना भाव अभिव्यक्ति में पूर्णतः भारतीय शैली में है।10 इसके अलावा इस चित्र में मोर, कुंए से पानी खींचती हुई औरते, फूलों से लदे पेड़ की सघन पत्तियाँ और गायें आदि में राजस्थानी शैली की छाप दिखाई पड़ती है। इसी प्रकार एक चित्र जिसमें बाबर को बाग लगवाते दिखाया गया है। इसमें परिष्कृत सरों के वृक्ष या फूलों वाले पेड़ प्रकृति की अपेक्षा रूमानी फारसी कविता के अंग अधिक जान पड़ते हैं।11

अपने पूर्ववर्ती चित्रकारों की भाँति ही मुगल शैली के चित्रकारों को भी प्रकृति ने अपने विभिन्न सौन्दर्यात्मक अवयवों व रूपों से अपनी ओर आकर्षित किया है। यद्यपि इस शैली के

चित्रकारों ने प्रकृति को स्वतन्त्र व स्वच्छन्द रूप से चित्रित नहीं किया है परन्तु फिर भी प्रकृति चित्रण को चित्र के महत्वपूर्ण तत्व के रूप में अवश्य स्वीकार किया गया है। प्रकृति के अध्ययन से मुगल चित्रकारों को बहुत कुछ सीखने को मिला। प्रकृति के अध्ययन से ही मुगल शैली के चित्रकार चित्र में मौलिकता का सजृन करने में सफल हुये हैं तथा चित्र में सौन्दर्य को कायम रखने के प्रयास में समर्थ हुए हैं।

प्रकृति शुरू से ही मानव की संगनी ओर सहगामी रही है। प्रकृति सदैव ही मानव के समस्त क्रियाकलापों के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान देती है और मनुष्य ने उसके समस्त रूपों को प्रत्येक स्थिति में अपने निकट ही पाया है। मुगल चित्रण शैली के प्राकृतिक उपकरणों के अंकन में क्षेत्रीय प्रभाव का भी असर पड़ा है। चित्रकारों ने अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण में विद्‌यमान प्राकृतिक रूपों व जीव जगत का उचित प्रयोग अपने चित्रों में परिवेश संयोजन व संगठन को शक्ति देने के दृष्टिकोण से किया है।

मुगल शैली के चित्रों में आम, कदली, बरगद के वृक्ष तथा छोटे-छोटे झाड़ीनुमा, वनस्पति का अंकन भारतीय विशेषता के कारण प्रचुर मात्रा में दृष्टिगत होता है इसके अलावा कुछ अन्य वृक्षों जैसे - सेब, अंजीर, सरों, चिनार आदि में पहाड़ी क्षेत्रीयता की स्पष्ट छाप दर्शित होती है। इस सन्दर्भ में 'गुजरी रागिनी', 'भारतहारियों का अपनी पत्नियों से वार्तालाप' चित्रांकन अति प्रशसंनीय हैं। इनके साथ-साथ फूलों से लदे पेड़-पौधों का अंकन अति उत्तम हुआ है। इन फूलों की पखुड़ियों को बड़ी बारीकी से बनाया गया है। गुलाब, नरगिस, चेरी, अनार, पोस्ता तथा अन्य प्रकार के पुष्पों को बड़ी सजीवता से चित्रित किया गया है। इस संदर्भ में 'मध्यम रागिनी'12, 'एक हाथी का अभ्यास'13, तथा 'श्री राग'14 में लाल, सफदे, पीले, नीले, बैगनी रंग से फूलों का बड़ी कोमलता से चित्रांकन किया गया है। उस्ताद मंसूर द्‌वारा बनाया गया 'लालपुष्प'15 नामक चित्र बहुत प्रसिद्ध है। मुगल शैली में पहाडी व मैदानी दोनों ही प्रकार के पुष्पों का चित्रण हुआ है। बादशाह जहाँगीर ने स्वयं लिखा है, "कश्मीर की सीमा में जो पुष्प दिखाई देते हैं उनका हिसाब नहीं लगाया जा सकता और जो नादिर-उल-असर उस्ताद मंसूर ने चित्रित किये हैं वे 100 वे अधिक हैं।"16 चित्रों में पुष्पों के ऊपर मड़राती हुई तितलियों, भौरों, मधुमक्खी तथा अन्य कीड़ों आदि का भी अंकन किया है। प्रातः पृष्ठभूमि सपाट, हल्की पीली, हरी या नीली है।17 क्षितिज को मध्य भाग से थोड़ा ऊपर तथा किसी-किसी चित्र में क्षितिज के पास के दृश्य को भी चित्रित किया गया है। इस प्रकार वनस्पति विज्ञान सम्बन्धी विषयों का मुगल चित्रकरों ने बड़ी सुन्दरता से अंकन किया है।

मुगल चित्र शैली में प्रकृति विषय को अभिव्यक्ति करने में एक सहायक के रूप में प्रयुक्त हुई है। शिकार के चित्रों में कलाकारों ने प्रकृति के रूप का दिग्दर्शन कराया और पशु-पक्षियों को स्वाभाविक व मानवीय लीलाएं करते हुए दिखाया गया है। शिकार का चित्रण जहाँगीर के समय में अत्यन्त उत्कृष्ट हुआ है। जहाँगीर जब भी शिकार पर जाता था तो चित्रकारों को साथ ले जाता था। शिकार के चित्रों में चित्रकारों ने प्रकृति को विषयानुरूप चित्रित किया है। शिकार दृश्य के एक चित्र में बादशाह जहाँगीर को अपने साथियों के साथ शिकार करते हुए दिखाया गया है।18 जान बचाते हुए जानवर व उनका पीछा करते

घुड़सवार गतिशील बने हैं। अ-समतल पृष्ठभूमि पर बने वृक्ष व चट्टानें चित्र के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं।

एक अन्य चित्र 'मृगों का रात्रि के समय आखेट'19 में शिकारी शिकार करने के लिये झाड़ियों की झुरमुट में छुपकर बैठे हैं और अत्यन्त सर्तक हैं। उनके सामने एक हिरन चित्रित किया गया है। चित्र का परिवेश सुन्दर बना है तथा पृष्ठभूमि में साधु अपनी कुटिया के दरवाजे पर बैठा हुआ अंकित है। मुगल चित्रकारों ने शिकार के चित्रों द्वारा अपनी कुशलता और सूक्ष्म का परिचय दिया है। छोटी-छोटी वस्तुओं का भी अकंन बड़ी बारीकी से किया गया है।

मुगल शैली में अधिकांश चित्र साहित्य एवं मुगल सम्राटों की जीवन घटनाओं पर आधारित बने हैं। मुगल कला में प्रकृति का अनेक रूपों में चित्रण हुआ है। प्रकृति को मानव की क्रीड़ास्थली व कर्मस्थली के रूप में चित्रित किया गया है। यद्यपि मुगलों की अधिकांश क्रियाकलापों को दरबारी परिवेश में चित्रित किया गया है तथापि प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में भी उनकी क्रियाओं को चित्रित किया गया है।

सर्वाधिक चित्रांकन अकबर व जहाँगीर के जीवन सम्बन्धी घटनाओं का हुआ है, शिकार करते हुये, बागों में भ्रमण करते हुए, प्रतियोगिताओं, दरबार के कार्यों में भाग लेते हुए आदि में विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधो व कुँजों से चित्र सुशोभित हैं। आम, कदली, जामुन, अनार, अंजीर, वट, पीपल, सरो, कमरख, सन्तरा, सेब आदि वृक्षों का विवरण हमें मुगलकालीन चित्रित ग्रन्थों में मिलता है। पशु-पक्षियों व अन्य प्राकृतिक अवयवों को यथास्थान बड़ी कोमलता और सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। इस संदर्भ में 'विश्वामित्र की तपस्या भंग करती रम्भा'20 (रामायण) 'अग्नि तापते हुए बाबर'21 (बाबर नामा), 'किले को ध्वस्त करते हाथी'22 (हम्ज़ानामा) आदि उल्लेखनीय हैं।

मुगल चित्रकारों ने मानवों के साथ-साथ विभिन्न पशु-पक्षियों के जीवन को भी चित्रित किया है। जिनमें हाथी, शेर, गाय, मोर, घोड़े, सारस, बाज, बैल आदि का सफल चित्रांकन किया है। मंसूर कृत 'बाज' का चित्र इसका उत्तम उदाहरण है। सन् 1580 में बना 'दो नीलकंठ' का चित्र अत्यन्त सुन्दर बना है। दोनों पक्षी एक चट्टान पर बैठे एक दूसरे की ओर देख रहे हैं। इनका रेखांकन बड़ी संवेदनशीलता और हृदयस्पर्शी ढंग से किया गया है। इसमें रंग स्वाभाविक और भावाभिव्यक्ति बहुत कोमल है। इसका परिवेश भी बहुत प्रासंगिक है, गहरे परन्तु कोमल रंगो में पत्तियाँ, निचले ढलान पर आकर्षक फूलों का विस्तार तथा पृष्ठभूमि में दो खजूर के पेड़ प्रेममय वातावरण की प्रस्तुति जिनमें दोनों पक्षियों को संकेत रूप में चित्रित किया गया है।

मुगल चित्रकारों ने प्रकृति को मानव के भावानुकूल ही अंकित किया है। मुगल शैली में रात्रि के समय में भी कुछ लीलायें चित्रित की गयी हैं। चित्रकारों ने रात्रि में गायन, वादन, नृत्य, गोष्ठी, शिकार आदि का चित्रांकन कलात्मक एंव यथार्थपूर्ण किया है। मुगल चित्रकारों ने चाँदनी रात में दोहरे प्रकाश के चित्रण में कमाल कर दिया है। ऐसे चित्रों में कागज पर सबसे पहले चाँदी का अस्तर या प्रष्ठिका लगा दी गयी थी जिसमें चाँदनी या पानी का प्रभाव दिखाई पड़ने लगता था कभी-कभी रात्रि में मशालों को सोने के रंग से बनाकर चाँदनी के प्रकाश को चाँदी के रंग से भी दिखाया गया है।23 इस सन्दर्भ में 'रात्रि के समय साधुओं की गोष्ठी'24 का चित्र बड़ा स्वाभाविक बना है। इसमें छः साधुओं को एक

कुटिया के सामने बैठे दिखाया गया है, वातावरण अंधकारमय है, जिसमें मोमबत्ती के मध्यम व झीने प्रकाश को बड़ी सुन्दरता से दर्शित किया गया है। आकाश व वृक्ष आदि गहरे रंग से बने है जो रात्रि के परिवेश को उजागर करने में सहायक है।

मुगल शैली में 'रागमाला' चित्रों का बड़ा सुन्दर चित्रांकन किया गया है। चित्रकारों ने 'रागमाला' चित्रों में प्रकृति को अनुपम सौन्दर्य के साथ चित्रित किया है। मेघों से आच्छादित आकाश चित्रण इन चित्रों में बड़ा कलात्मक हुआ है। पृष्ठभूमि को पाली, हरी व भूरी चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि में उगी हरी मखमली घास, छोटे-छोटे पेड़ व झाड़ियाँ पृष्ठभूमि की सुन्दरता को और बढ़ाती है। मानवाकृतियों व पशु-पक्षियों को राग-रागिनियों की आवश्यकतानुसार ही चित्रित किया गया है। जलाशय व पर्वतों को बड़ी बारीकी से चित्रित किया गया है। वृक्षों, फूलों व पत्तियों का अंकन बड़ी कोमलता और बारीकी से किया गया है। 'मेघ राग', 'मारवा रागिनी', 'श्रीराग' आदि विभिन्न राग-रागिनियों का बड़ा सुन्दर चित्रांकन मुगल चित्रकारों ने किया है। इस सन्दर्भ में 'मारखा रागिनी', 'काड़रा रागिनी' तथा 'मेघराग' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इन चित्रों में संतरगी आकाश, उमड़ती काली घटाएं, शान्त जलाशय सुन्दर पृष्ठभूमि, गतिमय व घुमावदार वृक्ष, चट्टानें, सपाट धरातल आदि का बड़ा सुन्दर चित्रांकन हुआ है।

## निष्कर्ष

इस प्रकार मुगल चित्र शैली के चित्रों में प्राकृतिक आकृतियों का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि मुगल शैली का चित्रकार कलात्मक सौन्दर्य के प्रति अत्यधिक जागरूक होने के साथ-साथ स्थानीय पर्यावरण से भी प्रेरित रहा है। प्राकृतिक स्वरूप जैसे वृक्ष, पर्वत, चट्टानें, आकाश, जलाशय, पशु-पक्षियों के चित्रण में वस्तुओं व मानवों के आकारों की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र व सुन्दर चित्रण इस शैली के चित्रकारों ने किया है। अतः अपर्युक्त सभी प्रकार के विश्लेषणात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुगल चित्रण शैली का चित्रांकन बड़ा यथार्थपूर्ण, कलात्मक एवं आलंकारिक रूपों में हुआ है। मुगल शैली में प्रकृति का अंकन एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में किया गया है। प्रकृति मुगल शैली के चित्रों में सौन्दर्य वृद्धि में सहायक रही है। तथा मुगल शैली के चित्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला, पृष्ठ 2*
2. *भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, डा. लोकेश चन्द्र शर्मा, पृष्ठ 12*
3. *कला विलास, डा. आर. ए. अग्रवाल, पृष्ठ 40*
4. *दो हाथियों का मिलन, अजन्ता गुफा न. 17*
5. *पद्मपाणि बोधिसत्व, अजन्ता गुफा न.-1*
6. *कला विलास, डा. आर. ए. अग्रवाल, पृष्ठ 47*
7. *कला विलास, डा. आर. ए. अग्रवाल, पृष्ठ 47*
8. *कला विलास, डा. आर. ए. अग्रवाल, पृष्ठ 47*
9. *अमीर आयाज का कामिर को मरते देखना, 'विक्टोरिया और अलबर्ट संग्रहालयों' के सौजन्य से*
10. *भारतीय चित्रकला (शोध-संचय) सम्पादक, डा. शुक्रदेव श्रोत्रिय पृष्ठ 15*
11. *भारतीय चित्रकला (शोध-संचय) सम्पादक, डा. शुक्रदेव श्रोत्रिय पृष्ठ 21*
12. *मध्यम रागिनी, 'रज़ा पुस्तकालय, रामपुर*
13. *एक हाथी का अभ्यास*
14. *श्री राग, रज़ा पुस्तकालय, रामपुर*
15. *लाल पुष्प, मुगल चित्रकला का इतिहास, (प्रथम) पृष्ठ 147*
16. *भारतीय चित्रकला का इतिहास, डा. अविनाश बहादुर वर्मा, पृष्ठ 148*

*17. भारतीय चित्रकला का इतिहास, डा. अविनाश बहादुर वर्मा, पृष्ठ 162*

*18. शिकार दृश्य, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

*19. मृगों का रात्रि के समय आखेट 'बाडलीयन पुस्तकालय*

*20. विश्वामित्र की तपस्या भंग करती रम्भा - फ्रीयर आर्ट गेलरी, वाशिंगटन*

*21. अग्नि तापते हुए बाबर, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

*22. किले को ध्वस्त करता हाथी, 'विक्टोरिया और अलबर्ट संग्रहालय'*

*23. भारतीय चित्रकला का इतिहास, डा. अविनाश बहादुर वर्मा, पृष्ठ 164*

*24. रात्रि में साधुओं की गोष्ठी, इन्डियन म्यूजियम कलकत्ता*